संपादकीय जागरण
शनिवार, 20 अक्टूबर, 2018 : आश्विन शुक्ल 11 वि. 2075

ईर्ष्या असफलता का दूसरा नाम है

भीषण लापरवाही

यह विचलित और व्यथित करता है कि जब सारा देश उल्लास के साथ दशहरा मना रहा था तब अमृतसर के निकट चौड़ा बाजार में रेल पटरियों के पास रावण दहन देख रहे तमाम लोग तेज रफ्तार ट्रेन की चपेट में आकर काल के शिकार बन गए। दशहरे जैसे पावन पर्व पर इतना भीषण और भयावह हादसा शोक के साथ क्षोभ से भी ग्रस्त करने वाला है, क्योंकि इसमें दोराय नहीं कि यदि स्थानीय प्रशासन ने तनिक भी सतर्कता और समझदारी का परिचय दिया होता तो उल्लास-उमंग से भरे लोगों को मौत के मुंह में जाने से बचाया जा सकता था। यह तथ्य किसी को भी हैरान-परेशान ही करेगा कि आखिर रेलवे पटरियों के निकट रावण दहन की अनुमति क्यों दी गई? यदि किन्हीं कारणों से ऐसा करना आवश्यक था तो फिर सुरक्षा के न्यूनतम प्रबंध भी क्यों नहीं किए गए? आखिर किसी भी जिम्मेदार शख्स ने यह क्यों नहीं सोचा कि रेलवे पटरियों के समीप रावण दहन के आयोजन के चलते अच्छी-खासी भीड़ जुट सकती है और सांझ के धुंधलके में लोग ट्रेन की चपेट में आ सकते हैं? यदि यह सामान्य सा बुनियादी सवाल किसी के भी मन में नहीं कौंधा तो इसे लापरवाही की पराकाष्ठा के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता। भले ही इस हादसे को विधि का विधान अथवा नियति की क्रूरता मानकर लोग खुद को सांत्वना दें, लेकिन यह हत्यारी लापरवाही का नतीजा है। अपने देश में ऐसी लापरवाही रह-रह कर देखने को मिलती है। धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों और खासकर मेले-ठेले के दौरान भगदड़ मचने से होने वाले हादसों का तो एक सिलसिला सा कायम है। चौड़ा बाजार में भी हादसे का एक कारण यह बताया जा रहा है कि रावण का अधजला पुतला गिरने से लोग भागकर रेलवे पटरियों पर पहुंच गए और इसी बीच ट्रेन आ गई। जल्द ही घटना के वास्तविक कारण सामने आएंगे और जवाबदेह लोग कठघरे में खड़े किए जाएंगे, लेकिन इससे उस नाकारापन को ओझल नहीं किया जा सकता जिसके चलते कई घरों के चिराग बुझ गए और देश का मन खिन्न हो गया।

अमृतसर के निकट हुआ हादसा एक बार फिर यह रेखांकित कर गया कि शासन-प्रशासन के साथ धार्मिक-सांस्कृतिकआयोजन करने वाले सबक सीखने से इन्कार कर रहे हैं। इसका कारण यही हो सकता है कि लापरवाही, अनदेखी और अनुशासन के अभाव के चलते होने वाले हादसों के लिए जिम्मेदार लोगों को कठघरे में नहीं खड़ा किया जा पा रहा है। इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि चौड़ा बाजार हादसे के बाद स्थानीय प्रशासन से लेकर रेलवे प्रशासन और राज्य सरकार सक्रियता एवं संवेदनशीलता का परिचय दे रही है और इसी क्रम में मुआवजे आदि की घोषणा भी की जा रही है, क्योंकि जो लोग मारे गए वे वापस नहीं आने वाले। माना कि भारत एक बड़ी आबादी वाला उत्सवप्रिय देश है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि यहां लोग उत्सवों के दौरान हादसों का शिकार होते रहें। सभी को इस पर सोचना होगा कि साक्षात दिखने वाली लापरवाही के चलते होने वाले हादसे केवल लोगों की जान ही नहीं ले रहे, वे दुनिया में भारत की छवि भी गिरा रहे हैं।

गुणवत्ता की चिंता

प्रधानमंत्री आवास योजना भले ही गरीबों को छत मुहैया कराने के लिए शुरू की गई हो, पर इस योजना में भी सेंधमारी की घटनाएं और शिकायतें आम हैं। अक्सर अपात्र लाभार्थियों के नाम सामने आते हैं तो कई बार पात्र लाभार्थियों द्वारा ही गड़बड़झाले की शिकायतें मिलती हैं। ऐसे प्रयासों पर प्रदेश सरकार ने जो कदम उठाया है, वह न केवल सराहनीय है, बल्कि इसके ठोस नतीजे भी सामने आएंगे। सरकार इस योजना के तहत लाभार्थी आधारित व्यक्तिगत आवास निर्माण घटक में निर्मित आवासों की गुणवत्ता की जांच कराने जा रही है। यह जांच थर्ड पार्टी करेगी। थर्ड पार्टी क्वालिटी मॉनीटरिंग एजेंसी के तौर पर टीयूवी एसयूडी साउथ एशिया लिमिटेड व सरटेक कंसल्टेंट को जिम्मेदारी दी गई है। ये संस्थाएं 49 जिलों में निर्माणाधीन आवासों की गुणवत्ता जांचेंगी और रिपोर्ट सरकार को देंगी।

प्रदेश सरकार ने जो कदम उठाया है, वह न केवल सराहनीय है, बल्कि इसके ठोस नतीजे भी सामने आएंगे

चूंकि इस योजना के तहत लाभार्थी को खुद आवास बनवाना होता है और सरकार उसे आवास बनाने के लिए ढाई लाख रुपये देती है लेकिन, मकान के नाम पर किसी तरह ढांचा खड़ा करके या अन्य तरह के निर्माण करके सरकारी रकम ऐंठने की शिकायतें आम है, ऐसे में सही रिपोर्ट मिलने पर कार्रवाई संभव हो सकेगी। साथ ही लाभार्थियों को अंतिम किस्त भी तभी जारी होगी। यह इसका एक पहलू है। देखने में आ रहा है कि निर्माण सामग्री के नाम पर लाभार्थी ज्यादा रकम का बिल बनवा लेता है और निर्माण सामग्री विक्रेता भी अतिरिक्त पैसे लेकर बिल बनाने में संकोच नहीं करता। जांच एजेंसियों को इस पहलू पर भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि मकान निर्माण की गुणवत्ता प्रभावित होने का काम यहीं से शुरू होता है।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद भी सबरीमाला में महिलाओं के प्रवेश का विरोध सही है?

आज का सवाल
क्या मी टू अभियान का असर आगामी चुनावों पर भी पड़ सकता है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर POLL लिखें, स्पेस देकर Y, N या C लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, N-नहीं, C-कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।
सभी आंकड़े प्रतिशत में।

संघ के स्वभाव में है खुलापन

डॉ. मनमोहन वैद्य

एक जीवंत संगठन होने के नाते आरएसएस में परिवर्तन सहज हैं। हां, विशाल और व्यापक संगठन होने के कारण परिवर्तन लागू करने में समय लगता है

विजयदशमी पर सरसंघचालक मोहन भागवत के संबोधन के बाद जैसी प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं कुछ वैसी ही उनकी तीन दिवसीय व्याख्यानमाला के उपरांत भी आई थीं। तब किसी ने भागवत जी के संबोधन का स्वागत किया। किसी ने जो कहा गया उसकी प्रामाणिकता पर संदेह जताया। कुछ लोगों को अभी भी लगता है कि संघ में खुली चर्चा या संवाद के लिए कोई अवसर नहीं है, परंतु वास्तविकता है कि संघ में अनेक विषयों पर खूब खुली बहस और चर्चा होती है। सरसंघचालक समेत सभी अखिल भारतीय अधिकारियों के प्रवास में प्रत्येक स्थान पर स्वयंसेवकों से प्रबुद्ध नागरिकों से जिज्ञासा समाधान का कार्यक्रम अवश्य रहता है। संघ के बारे में जो दुष्प्रचार होता रहा उसके कारण बाहर के लोगों को ऐसा लगना स्वाभाविक था कि संघ में अब खुलापन आ रहा है, नए विचारों का स्वागत हो रहा है। इसीलिए किसी ने इसे ग्लासनोस्त की उपमा भी दी। विदेशी विचारों या विरोधियों की शब्दावली का हमें ऐसा अभ्यास हो जाता है कि हम भी अनजाने में उनका उपयोग करने लगते हैं। ग्लासनोस्त और पेरेस्त्रोइका यानी खुलापन और सुधार। ये संकल्पनाएं मूलतः रूसी भाषा से हैं। कम्युनिस्ट रूस की कठोर साम्यवादी व्यवस्था के पतन और विखंडन के समय ये संकल्पनाएं चर्चा में आईं और इस तरह बहुत वर्षों की तानाशाही व्यवस्था के बाद सामाजिक चर्चा में खुलापन और आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में सुधारों की बात की गई।

सेमेटिक मूल के विचारों की यह विशेषता रही है कि सोचने का काम एक व्यक्ति या फिर एक छोटा समूह ही करता है। उसका अनुसरण करना सभी के लिए बाध्यता होती है। इससे अलग सोचेंगे तो वह द्रोह होगा। इसकी कड़ी सजा भी तय है। रूस में कम्युनिस्ट क्रांति के नाम पर कुछ ऐसा ही हुआ था। चर्च ने यह ईसाईयत के नाम पर शुरू किया था। इसके चलते गैलीलियो को कारावास सहना पड़ा। उनका अपराध इतना ही था कि चर्च की मान्यता के विपरीत उन्होंने कहा कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। कम्युनिस्ट रूस और चीन में मार्क्स की पोथी के खिलाफ विचार रखने के कारण कितने ही लोगों को मृत्यु का सामना करना पड़ा या देश छोड़ना पड़ा। जहां नया विचार प्रकट करने की सोच भी नहीं सकते वहां नया विचार करने की सुबह का निश्चित ही महत्व है, परंतु भारत में देश, काल, परिस्थिति के अनुसार समाज को दिशा देने वाले, नई राह बताने वाले संत, आध्यात्मिक पुरुष, समाज सुधारक यहां हमेशा होते आए है और आते रहेंगे। आधुनिक काल को देखें तो स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, नारायण गुरु आदि अनेक नाम सामने आते हैं। सामाजिक सुधारकों को भी समाज ने मान्यता दी है। इसीलिए विवेकानंद की यूरोपियन मूल की शिष्या भगिनी निवेदिता, जो ईसाई पादरी की बेटी थीं, ने लिखा कि रूनो यदि भारत में होता तो जिंदा नहीं जलाया जाता।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का वैचारिक आधार भारतीय चिंतन होने के कारण संघ में खुली बहस हमेशा चलती है और अनेक नए सुझावों का स्वागत भी होता है। ऐसे कुछ अनुभव-उदाहरण जानने योग्य हैंः मेरा जन्म संघ परिवार में ही हुआ। मेरे पिताजी ने 18 वर्ष की आयु में 1941 में आजीवन संघ कार्य करने की प्रतिज्ञा ली। वह आज भी उसका पालन कर रहे हैं। बचपन से ही शाखा में जाने का मेरा अनुभव है। मैंने कभी संघ में मुसलमान या ईसाई के प्रति घृणा या तिरस्कार की बात नहीं सुनी। राष्ट्र विरोधी तत्वों का विरोध (घृणा या तिरस्कार नहीं) जम कर होता देखा है। 1971 से मुझे एक शाखा का दायित्व मिला जो नागपुर में अजानी स्टेशन के सामने चलती थी। पास ही सरकारी मेडिकल हॉस्पिटल के मकान थे। एक दिन 10-12 बच्चों का एक नया समूह शाखा में आया। सभी का परिचय हुआ। उनमें आमिल खान और फिरोज खान 7वीं और 5वीं में पढ़ने वाले दो भाई थे। शाखा में किसी मुस्लिम से मैं पहली बार मिल रहा था। दो दिन बाद मैं उनके घर संपर्क के लिए गया। बच्चों के पिता बशीर खान एंबुलेंस के ड्राइवर थे। मैंने अपना परिचय दिया और यह जानकारी दी कि उनके बच्चे दो दिन से शाखा में आ रहे हैं। उन्होंने चाय के लिए कहा। मैं तब चाय नहीं पीता था, परंतु मुझे विचार आया कि मैं मना करुंगा तो कहीं वह यह न सोचने लगें कि हम मुसलमान हैं इसलिए मना कर रहे। इसलिए मैंने आधा कप चाय ली। चाय पीने का यह मेरा पहला अनुभव था। मुझे याद है कि आमिल और फिरोज 10 वीं तक शाखा में नियमित आते रहे। संघ मुसलमानों का तिरस्कार करता है और उन्हें दुश्मन मानता है, ऐसा दुष्प्रचार होता देखकर आश्चर्य होता था। मेरा प्रांत प्रचारक का दायित्व 1996 से 2006 तक था। अखिल भारतीय स्तर पर अनेक बैठकों में रहना हुआ। मुझे कोई नया विचार सूझता तो मैं सरकार्यवाह शेषाद्रि जी से साझा करता। पूजनीय रज्जू भैय्या ने भी कभी मुझे नए विचार, सुझाव देने से रोका नहीं। हां, एक बार ऐसा कहकर टोका अवश्य था कि अपनी भाषा शालीन होनी चाहिए।

संघ में कैसा खुलापन है, इसका एक अन्य उदाहरण मुझे याद है। एक विभाग प्रचारक को कुछ समय के लिए भारत के बाहर चलने वाले हिंदू स्वयंसेवक संघ का दायित्व मिला। हिंदू स्वयंसेवक संघ की कार्य पद्धति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समान ही है, परंतु प्रार्थना अलग है। विभाग प्रचारक ने वहां जाने पर पाया कि भारत में संघ की प्रार्थना की दो महत्व की बातें वहां की प्रार्थना में नहीं हैं और वे जुड़नी चाहिए। जब उन्होंने अपने निकटस्थ अधिकारी से यह कहा तो जवाब मिला कि यह प्रार्थना माननीय भिड़ेजी ने बनाई है और पूजनीय गुरुजी ने देखी है। वर्षों से चल रही है। उन्हें यह उत्तर ठीक नहीं लगा। उन्होंने जब दत्तोपंत ठेंगड़ी जी को यह बताया तो ठेंगड़ी जी कहा कि यह यदि सच है तो परिवर्तन करना चाहिए। जब यह बात संघ के पदाधिकारियों के ध्यान में लाई गई तो उस पर विचार हुआ और वर्ष 2000 से विश्व विभाग की 50 वर्षों से प्रचलित प्रार्थना में एक नया श्लोक जोड़ने का निर्णय हुआ। एक विभाग प्रचारक के सुझाव पर प्रार्थना जैसे गंभीर विषय पर चर्चा करते हुए उसमें सहज परिवर्तन करना संघ की कार्यपद्धति की शक्ति है। इससे यह भी पता चलता है कि संघ में कितना खुलापन है।

संघ के एक जीवंत संगठन होने के नाते ऐसे परिवर्तन सहज हैं। हां, इतना विशाल और व्यापक संगठन होने के कारण ऐसे परिवर्तन नीचे तक समझाने और लागू करने में समय लगता है। 1990 के बाद जब सेवा, संपर्क और प्रचार विभाग संघ में नए जुड़े तब उनकी उपयोगिता नीचे तक समझाने में पांच से दस साल लगे थे। नई बातों का स्वीकार करने का विरोध नहीं है। उन पर चर्चा अवश्य होती है और प्रश्न पूछे जाते हैं। 2015 में जब 85 वर्षों बाद संघ के गणवेष में निक्कर बदलकर पैंट स्वीकार की गई तब भी निर्णय में सहमति लाने के लिए पांच वर्ष लगे। वस्तुतः जहां पोथीबंद विचारों का अंधकार है वहां ग्लासनोस्त और पेरेस्त्रोइका का महत्व है परंतु जहां सतत नया विचार होता रहता है और पुराने शाश्वत तत्वों के आधार पर नई बातों को सहज स्वीकार किया जाता है वहां इन रूसी संकल्पनाओं की आवश्यकता नहीं। इस संबंध में प्रसिद्ध गुजराती लेखक ध्रुव भट्ट की एक कविता की पंक्ति याद आती हैः

रात्रि के जागरण तो पृथ्वी के होते हैं
सूरज की तो रात ही कभी नहीं होती है

(लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह हैं)

response@jagran.com

जुल्म के खिलाफ महिलाओं की बगावत

कभी-कभी ऐसा लगता है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री को शक्तिहीन करके पुरुष को बलशाली बनाने का उपक्रम है। प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका सीमोन द बुआ कहती हैं, 'स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है। उसे पहले समाज गढ़ता है, फिर उसके लिए अपने मुताबिक कायदे-कानून भी बनाता है। उसमें जरा सी हेरफेर पितृसत्ता के लिए बर्दाश्त से बाहर हो जाता है।' तरुण तेजपाल, राम रहीम, आसाराम, नारायण साई, आरके पचौरी आदि नाम अभी जेहन से ओझल भी नहीं हुए थे कि एक नई फेहरिस्त सामने आ गई, जिनमें नाना पाटेकर, आलोक नाथ, एमजे अकबर, विनोद दुआ सरीखे बड़े नाम शामिल हैं। ऐसे नामों की सूची लंबी होती जा रही है। इसकी शुरुआत अभिनेत्री तनुश्री दत्ता ने तब की जब उन्होंने अपने साथ हुए हादसे को समाज के सामने रखा। इसके बाद विंता नंदा, प्रिया रमानी, प्रेरणा बिंद्रा, गजाला वहाब समेत तमाम महिला पत्रकारों, अभिनेत्रियों और अन्य ने अपनी आवाज उठाई। यह सिलसिला कायम है। इसे तब तक कायम रहना चाहिए जब तक किसी तार्किक अंजाम तक न पहुंच जाया जाए। मी-टू अभियान के दायरे में तथाकथित इज्जतदार फिल्मकार, पत्रकार, मजहबी लोग, बॉस, सहकर्मी आदि सामने आए है। इसका मतलब है कि हर तरह के कार्यस्थलों में महिलाओं के लिए मुसीबत है।

नाइश हसन

मी-टू अभियान बताता है कि जब व्यवस्था ने उत्पीड़न के खिलाफ कदम नहीं उठाया तो महिलाएं खुद सामने आ गईं

इस अभियान की गूंज दुनिया के तमाम हिस्सों में सुनाई दे रही है। शायद पितृसत्तात्मक समाज को यह बर्दाश्त नहीं और इसीलिए यौन शोषण के खिलाफ आवाज उठाने वाली महिलाओं पर मानहानि के मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं। यौन शोषण के आरोपों से घिरे लोगों के जवाब हैरान करने वाले हैं। बानगी देखिए-औरतें झूठ बोल रही हैं। इतने समय चुप क्यों रहीं? काम से इस्तीफा क्यों नहीं दिया? बाद में भी काम क्यों करती रहीं? चुनाव से पहले क्यों आवाज उठाई? सब कुछ नामी गिरामी औरतों के साथ ही क्यों हो रहा है? इस तरह के हैरान करने वाले आरोप शर्मसार करते हैं। क्या स्त्री सिर्फ पुरुष की दिलजोई के लिए है? क्या उसने शोषण के खिलाफ आवाज उठाकर बुरा किया? क्या महिलाएं अपने को तहखानों में कैद कर लें और रोजी-रोटी कमाने से खुद को अलग कर लें? इन नामुनासिब सवालों का जवाब नहीं हो सकता। स्त्री आधी दुनिया है, लेकिन तराजू और पैमाना लेकर स्त्री-पुरुष के लिए जमीन और आसमान, घर और समाज, संसद और सड़क को आधा-आधा बांटा तो नहीं जा सकता। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इनकी अलग-अलग दुनिया नहीं बनाई जा सकती। मी-टू अभियान के तहत अभी बात सिर्फ उस वर्ग की हो रही है जिसे बुद्धिजीवी कहा जाता है, लेकिन ऐसा मालूम होता है कि उसकी बुद्धि और उसका चिंतन महज किताबों के पन्नों तक ही सीमित है। जब वह किताब बंद करता है तो वापस उस दुनिया में लौट जाता है जहां उसके भीतर का शैतान सेंध लगाए बैठा है। शायद उसे घमंड है कि उसका कुछ नहीं हो पाएगा और नियम-कानून किसी और के लिए होते हैं, उनके लिए नहीं। इसी खुशफहमी का शिकार होकर वे पिछली घटनाओं से सबक भी नहीं सीख पाए। यह समझना जरूरी है कि ऐसे वाकये सिर्फ संभ्रांत वर्ग या एक खास तबके की महिलाओं के साथ ही नहीं पेश आते। आम औरतें जो जिंदगी की जद्दोजहद में लगी हैं, संघर्ष कर रही हैं, खेती किसानी में लगी हैं या घर के भीतर हैं उनके साथ भी ऐसे मामले खूब होते हैं। ऐसी आम औरतें तो जुबान खोलने की हिम्मत ही नहीं कर पातीं। उन्हें परिवार से लेकर समाज तक किसी का भी सहयोग नहीं मिलता-मीडिया का भी नहीं।

पितृसत्तात्मक समाज को इस सच्चाई से अवगत होना चाहिए कि तमाम नाइंसाफी झेलते हुए औरतें अपने दम पर कई बड़े बदलाव लाई हैं। वे यौन हिंसा के सवाल पर भी खामोश नहीं रह सकतीं। वे अपने कंधों पर अब इस कथित मर्दानगी का बोझ ढोने को कतई तैयार नहीं हैं। वे कथित इज्जतदार घुसपैठियों से मुकाबला करने को तैयार हैं। वे बगावत पर है। आधी आबादी इंसाफ की हकदार है। आज औरतें समाज से, व्यवस्था से और सत्ता से सवाल कर रही हैं। जब व्यवस्था ने गैरबराबरी और जुल्म के खिलाफ खुलकर कदम नहीं उठाया तो महिलाएं सारी परंपराओं को ताक पर रखते हुए सामने आ गईं। वे जानती हैं कि उन्हें कानूनी तिकड़मबाजी में इसकी कीमत भी चुकानी पड़ सकती है, उन्हें नौकरियों से वंचित किया जा सकता है, लेकिन शायद महिलाओं का कारवां यह कहते हुए निकल पड़ा है कि कटते भी चलो बढ़ते भी चलो, बाजू भी बहुत हैं सर भी बहुत...। ऐसा तभी होता है जब अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वाले यह जान जाते हैं कि आखिर में जीत उन्हीं की होगी।

(लेखिका रिसर्च स्कॉलर हैं)

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य | डीजल की खपत

(1000 मीट्रिक टन में)

स्रोतः पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय

ऊर्जा

सफलता का रहस्य

इस दुनिया में हर व्यक्ति सफल होना चाहता है और सफलता के प्रति मानव की यह चाहत स्वाभाविक है, किंतु इस संदर्भ में एक प्रश्न यह उठ खड़ा होता है कि जीवन में सफल होने का रहस्य क्या है? कदाचित इस सच को बहुत कम लोग ही स्वीकार कर सकेंगे कि सफलता के कलश-कंगूरों का सफर असफलताओं के ऊंचे-नीचे और टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होकर गुजरता है।

असफलता के बाद निराशा और हताशा का शिकार होकर सफल होने के लिए प्रयास करना छोड़ देने पर सफलता कभी भी प्राप्त नहीं होती है। जब एक बच्चा पहली बार इस धरती पर चलना सीखने के लिए अपने पांव आगे बढ़ाता है तो इस कोशिश में वह कई बार गिरता है और यही कारण है कि प्रारंभ में माता-पिता अपने बच्चों की अंगुलियां पकड़ कर चलना सिखाते हैं, इस प्रकार बेशुमार कोशिशों और असफलताओं के बाद बच्चा चलना सीख पाता है। इसका यह भी आशय है कि जीवन में चलना सीखने के लिए बच्चे का कई बार गिरना और फिर उतनी बार ही उठना एक कुदरती नियम है और इसका कोई शॉर्ट-कट नहीं है। सर्वविदित सत्य यही है कि असफलता के गर्भ में ही सफलता के भ्रूण छुपे होते हैं।

दुनिया में यदि सफल व्यक्तियों के जीवन का गौर से अध्ययन करें तो यह सच कई बार शिद्दत से हमारे सामने आ खड़ा होता है कि बिना असफल हुए वे कभी भी सफल नहीं हो पाए। यह अलग बात है कि सभी सफल व्यक्तियों के जीवन में असफलताओं की प्रकृति और आवृत्ति एक समान नहीं होती है। किसी के लिए कष्ट और असफलता की प्रकृति कम कष्टकारक और किसी के लिए बेहद पीड़ादायक हो सकती है। कोई व्यक्ति एक बार की असफलता के बाद दूसरी कोशिश में ही सफल हो जाता है तो किसी के जीवन में सफलता का मुकाम कई बार असफलताओं की राह पर बिना हिम्मत हारे और निराश हुए दृढ़ इच्छा शक्ति के फलस्वरूप प्राप्त होता है। लिहाजा यदि हम सफलता के मुरीद हैं तो हमें अपने जीवन की असफलताओं से घबराना नहीं चाहिए, बल्कि उनसे अपनी कमियों के बारे में सीखकर तब तक कोशिश करते जाना चाहिए जब तक हम अपने सपने को साकार करने में सफल न हो जाएं।

श्रीप्रकाश शर्मा

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

लोकनायक श्रीराम का वैविध्यपूर्ण चरित्र

प्रो. कृपाशंकर चौबे द्वारा अपने लेख 'मर्यादा सिखाती राम की अनुपम कथा' में श्री रामचरितमानस की व्यापक प्रभावशीलता का कारण उसमें निहित श्रीराम के आदर्श चरित्र को मानना उचित है। वस्तुतः दशरथ नंदन राम भी अन्य राजकुमारों की तरह अयोध्या के एक राजकुमार थे, लेकिन अपने लोकनायकत्व के कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम बन गए। लोक-मर्यादा का पालन करते हुए उन्होंने अपने वैविध्यपूर्ण चरित्र से तत्कालीन भारतीय समाज के बीच जो उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किए वह आज भी आदर्शमय और अनुकरणीय हैं। श्रीराम के नैतिकतापूर्ण आचरण की मर्यादा उनके उस वैविध्यपूर्ण चरित्र में स्पष्ट रूप से झलकती है, जहां वे एक ही कुल और रक्त परंपरा से जुड़े बाली और सुग्रीव में से अहंकारी बाली का वध करते हैं तो पीड़ित सुग्रीव को गले लगाकर उनसे मित्रता स्थापित करते हैं। अपने परम शत्रु लंकाधिपति रावण के अनुज विभीषण को अपनी शरण में लेकर, उस अलौकिक संपदा का अधिकारी बना देते हैं, जो महापराक्रमी रावण भगवान शंकर को अपने दसों शीश समर्पित करने के बाद भी अर्जित नहीं कर पाया था। ऐसे ही वनवासी भील-वानर आदि के बीच समरसता का भाव-बोध जाग्रत करने के उद्देश्य से अकुलीन शबरी के प्रेम-रस पगे झूठे बेर खाने में भी उन्होंने संकोच नहीं किया था। लंकेश रावण से शत्रुता होने के बावजूद श्रीराम ने उसके पाण्डित्य का सम्मान किया और लंका विजय के लिए समुद्र-सेतु निर्माण के समय अपने आराध्य शिवजी के लिंग की स्थापना के समय पुरोहित कर्म के लिए रावण को सादर आमंत्रित किया था। श्रीराम के इस वैविध्यपूर्ण चरित्र की पराकाष्ठा उस समय दिखाई देती है जब अयोध्या के राजा के रूप में लोकारोप से बचने के लिए उन्होंने अपनी गर्भवती पत्नी सीता का परित्याग कर राज-धर्म की मर्यादा का पालन किया था। आज युगों बाद भी श्रीराम का यह वैविध्यपूर्ण चरित्र उनको मर्यादा पुरुषोत्तम बनाए हुए है तो केवल इसलिए, क्योंकि श्रीराम ने जो कुछ किया वह लोकहित के लिए किया था। वे सही अर्थों में अपने युग के लोकनायक थे।

डॉ. विष्णु प्रकाश पाण्डेय, अलीगढ़

हास्यास्पद बयान

'मी टू' मुहिम के तहत फिल्म जगत की नामी गिरामी हस्तियों की करतूत उभर कर सामने आ रही हैं। इसके साथ ही कुछ बड़े राजनीतिज्ञों के भी मुखड़े उजागर हो रहे हैं। ऐसे में एक केंद्रीय मंत्री का यह कहना कि यह विकृत मानसिकता का आविष्कार है, बड़ा ही हास्यास्पद है। देश की सभी सरकार नारी के उत्थान व उनके सशक्तिकरण की बातें करती हैं और एक ये हैं कि सरकार में रहते हुए भी अपने शोषण के विरुद्ध आवाज बुलंद करने वाली महिलाओं को गलत बताने की चेष्टा कर रहे हैं, जबकि उन्हें महिलाओं के शोषण के खिलाफ कार्रवाई करने की बात कहनी चाहिए।

mahesh_nenava@yahoo.com

परंपरा गलत न हो

सबरीमाला मंदिर मामले में लोगों ने कोर्ट के फैसले को गलत माना है। लोगों को लगता है कि कोर्ट ने उनके धर्म और परंपरा के बीच में हस्तक्षेप किया है, परन्तु मानवता और नागरिकता भी कोई धर्म है। लोग इस बात को दूसरे धर्म के साथ जोड़ रहे हैं कि दूसरे धर्म के साथ ये पाबंदी क्यों नहीं है। समझने वाली बात ये है कि ये किसी धर्म को लेकर नही कहा गया। यह फैसला समानता के अधिकार का है। यह बात तो बाल विवाह और सती प्रथा पर भी लागू होती है। ये परंपराएं गलत थीं, लेकिन इसके भी समर्थक थे। इसका मतलब यह तो नहीं कि हम गलत परंपराओं को ढोते रहें।

अवन्तिका मिश्रा, डा. आंबेडकर महाविद्यालय, दिल्ली

रावण की सजा से सीख

रावण को बुराई का प्रतीक माना जाता है, इसलिए हम हजारों साल से रावण का पुतला जलाने की परंपरा निभाते आ रहे हैं। हर साल उसके पुतले की उंचाई बढ़ती जाती है। दशहरा पर्व पर पूरे देश में लाखों पुतले फूंके जाते हैं। हम बुराई के प्रतीक का पुतला तो जलाते रहे पर खुद के भीतर छिपी आसुरी प्रवृति को अब तक नहीं जला सके। वह आसुरी प्रवृति आज भी हमारे भीतर जिंदा है। लंकेश रावण ने तो सीता को छुआ तक नही था, उसने तो केवल सीता का हरण करने का ही अपराध किया था, फिर भी उसे भाई व पुत्रों सहित मृत्यु दंड भोगना पड़ा था। लेकिन रावण को मिली सजा से समाज ने कोई सीख नहीं ली। महिलाओं के अपमान की घटनाएं समाज को शर्मसार करती हैं। मासूम बेटियों के साथ बढ़ती दुराचार की घटनाएं मन को विचलित करने वाली हैं। ऐसी घटनाओं को अंजाम देने वाले असुरों को न तो समाज की चिंता है और न किसी सजा का भय ही उन्हें डराता है। राम ने कहा था- भय बिन प्रीत ना होए रे लक्ष्मण, ला दे अग्नि बाण मेरा। ऐसे असुरों के मन में भय उत्पन्न करना होगा ताकि अपराध करने से पहले वे हजार बार सोचें। जिस दिन समाज में शुचिता आ जाएगी तभी हमारा बुराई का पुतला जलाना सार्थक होगा।

रणजीत वर्मा, फरीदाबाद

असली रावण

हर साल दशहरा पर रावण का पुतला जलाकर मान लेते हैं कि बुराई का अंत हो गया। लेकिन बुराई का रावण इतना आगे बढ़ चुका है कि अच्छाई की जीत होना कठिन सा प्रतीत होता है। आज हम इस सदी में असली रावण को देखना ही नहीं चाहते। रावण रोज पैदा होता है। गरीबी, अशिक्षा, आतंकवाद आदि बनकर रोज हमारे सामने खड़ा है नया रावण।

शिवानी त्यागी, ट्रोनिका सिटी, लोनी

ट्वीट-ट्वीट

कंधार अपहरण कांड में कांग्रेस ने भाजपा को हमेशा ताना दिया कि तत्कालीन विदेश मंत्री जसवंत सिंह अपने साथ आतंकवादियों को लेकर क्यों गए? अब उनके बेटे के कांग्रेस में शामिल हो जाने के बाद क्या अब इस घटना का आगे भी जिक्र होता रहेगा? अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

मैं 56 साल की हूं। क्या मैं सबरीमाला मंदिर में प्रवेश कर सकती हूं? तसलीमा नसरीन@taslimanasreen

सुब्रमण्यम स्वामी और मोहन भागवत को रजस्वला महिलाओं का नेतृत्व करते हुए सबरीमाला जाना चाहिए। पंथ को परे रखना चाहिए। भारत का संविधान आज के समय का नया धर्म बनना चाहिए। तुफैल अहमद@tufailelif

माकपा महासचिव सीताराम येचुरी ने सबरीमाला मंदिर की तुलना कथित बाबरी मस्जिद से कर वामपंथ के बौद्धिक दिवालियापन का परिचय दिया है। प्रो. राकेश सिन्हा@RakeshSinha01

भागवत ने साफ कर दिया है कि चुनाव जीतने के लिए राममंदिर के मुद्दे को आरएसएस खड़ा करेगा। यानी मोदी सरकार के कामों पर उसे भरोसा नहीं कि उसके बल पर जीत सकते हैं। संदेश मोदी के लिए भी है और बहुमत न मिलने पर प्लान बी भी है। अगर मोदी चुनाव न जीत पाए तो उनकी जरूरत क्या? आशुतोष@ashutosh83B

जनपथ

सबरीमाला में दिखे खत्म न होती रार,
एक तरफ है आस्था एक तरफ अधिकार।
एक तरफ अधिकार कोर्ट जो है दे बैठा,
पर उसका क्या होय दिलों में जो है पैठा?
धर्म क्षेत्र में क्रांति कर रही गड़बड़झाला,
जिसका बना शिकार आजकल सबरीमाला।

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 29 अंक 95